# कोलकाता में हिंसा और मूर्ति तोड़ने की कारगुजारी अमित शाह की देखरेख में हुई

## दूसरे राज्यों से भेजे गए गुंडे-मवालियों ने पश्चिम बंगाल में अराजकता फैलाई

**मजदूर मोर्चा ब्यूरो**

**कोलकाता:** बंगाल में अमित शाह के रोड शो से जुड़ा एक वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में भाजपा का नेता दिखाई दे रहा है। ये युवक मंगलवार को राज्य में अमित शाह के रोड शो से पहले पार्टी के सदस्यों से शो में आने का निवेदन कर रहा है।

ये युवक पार्टी के सदस्यों से कह रहा है कि शो में आठ फुट का डंडा लेकर आएं। शो के दौरान पुलिस और टीएमसी के गुंडों से लड़ना है। वीडियो में युवक ने कहा, 'पार्टी के लोगों को पता है आप किस लिए हैं। कल के रोड शो में झमेला-झंझट हो सकता है। जो सदस्य नहीं आएंगे उन्हें पार्टी से बाहर निकाल देंगे। आप सभी को कल झमेला करना है और आना है।

'फाटाफटी' ग्रुप के सभी सदस्यों को कल के प्रोग्राम मे आना है। कल अमित शाह का रोड शो है। उस शो मे आप लोगों को मुख्य भूमिका निभानी है। आठ फुट का डंडा लेकर पुलिस और टीएमसी के गुंडों से लड़ना है हम लोगों को।'

टीएमसी नेता डेरेक ओब्रायन ने वीडियो को ट्विटर पर पोस्ट किया। उन्होंने लिखा कि अमित शाह के रोड शो के दौरान बंगाल में हुई हिंसा पहले से तय थी। उन्होंने ट्वीट किया, 'बीजेपी की पहले से तय साजिश. ये विडियो हिंसा से एक दिन पहले का है। इस पर शाह क्या कहेंगे? या उनके जुड़वा? झूठ सबके सामने आ गया है।'

हकीकत यह है कि 14 मई को कोलकाता में अमित शाह का रोड शो था। इसी रोड शो के दौरान जमकर तोड़ फोड़ हुई। हिंसा और आगजनी के लिए अब एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। बीजेपी का कहना है कि ये काम टीएमसी ने किया और टीएमसी न्यूटन का थर्ड लॉ के तहत आरोप उसी गति से वापस लगा रही है। ममता बनर्जी का कहना है कि ये सब अमित शाह की साजिश है और अमित शाह कह रहे हैं कि 'चुनाव तो पूरे देश में हो रहे हैं फिर हिंसा केवल बंगाल में क्यों?'

इसी हिंसा में प्रसिद्ध विचारक और शिक्षाविद ईश्वरचंद्र विद्यासागर की मूर्ति तोड़ दी गई। मूर्ति तोड़ना बंगाल में बड़ा मुद्दा बन गया है। टीएमसी ये मैसेज देना चाहती है कि 'विद्यासागर का अपमान हम सबका अपमान है'।

### अमित शाह के सवाल और हकीकत

अमित शाह ने कहा कि शाम को साढ़े सात बजे की घटना है। कॉलेज बंद हो चुका था। तो हमारा यही सवाल है कि चाबी बीजेपी कार्यकर्ताओं के पास कहां से आएगी? कॉलेज पर किसका प्रशासनिक कब्जा है? मूर्ति तक पहुंचने के लिए दो दरवाजे पार करने पड़ते हैं। इसलिए टीएमसी ने ही मूर्ति तोडी है। लेकिन इंडियन एक्सप्रेस में छपी एक खबर के अनुसार अमित शाह के इन दावों से सच्चाई थोड़ी अलग है। वीडियो किसी और ही तरफ इशारा कर रहे हैं। वही वीडियो जिसका जिक्र और ट्वीट डेरेक ओब्रॉयन ने किया है।

अखबार कहता है कि जिस तरह के वीडियो सामने आए हैं उसमें 'चाबी' की जरूरत दिखाई नहीं दे रही है। वीडियो में दिखाई दे रहा है कि भगवा टी शर्ट पहने कुछ लोग कॉलेज का गेट तोड़ने की लगातार कोशिश कर रहे हैं।

पकड़े गए सब लोग भाजपा वर्कर इंडियन एक्सप्रेस की पुलिस अधिकारियों से बातचीत में पता चला कि, कोलकाता पुलिस ने हिंसा के लिए कुल 58 लोगों को गिरफ्तार किया है। और ये सब भाजपा के कार्यकर्ता हैं। एक तथ्य से पता चलता है कि किस तरह दूसरे राज्यों के लोग अमित शाह के रोड शो के लिए लाये गए थे। इंदौर (मध्य प्रदेश) में एक मुहल्ला है परदेसीपुरा। इस पुलिस थाने में 927 ऐसे गुंडे बदमाशों के नाम दर्ज हैं जिनके खिलाफ दो से ज्यादा केस दर्ज हैं। पुलिस ने जांच में पाया कि करीब तीन सौ से ज्यादा गुंडे-बदमाश इंदौर से गायब हैं। पुलिस ने आगे की जांच में पाया कि इन्हें भाजपा के नेता कोलकाता ले गए हैं। ताज्जुब नहीं कि ये गुंडे कोलकाता की हिंसा में शामिल न रहे हों।

आल्ट न्यूज ने भी एक वीडियो जारी किया है। वेबसाइट का कहना है कि 'एक मूर्ति जैसा सफेद टुकड़ा' वीडियो में बार-बार दिखाई दे रहा है। इसी वीडियो में जो भीड़ उस सफेद टुकड़े को उठाकर दीवार पर फेंक रही है उसमें दो लोग भगवा टी शर्ट पहने हैं।

हालांकि भाजपा का कहना है कि पहले पत्थरबाजी कॉलेज के भीतर से हुई। अचानक चलते हुए रोड शो के बीच में कॉलेज कैम्पस से पत्थर फेंके गए। टीएमसी के लोगों ने ही तोड़ फोड़ की है और मूर्ति भी इन्हीं लोगों ने तोड़ी है।

### तेजेंदर बग्गा वहां क्या कर रहा था

तेजेंदर बग्गा दिल्ली भाजपा का प्रवक्ता है। लेकिन इसकी अपनी एक अलग दुकान भी है। उस दुकान का नाम शहीद भगत सिंह क्रांति सेना है। कोलकाता में हिंसा वाले दिन यह वहीं था। अमित शाह के रोड-शो में यह हिस्सा लेने आया था लेकिन इसका मकसद कुछ और था। जो उसी दिन खींचे गए एक फोटो से जाहिर होता है। बग्गा के नेतृत्व में दूसरे राज्यों से गये लोग कोलकाता में एक जगह जमा हुए, जहां इन्होंने एक गुप्त बैठक की। उस बैठक में मौजूद लोग बाद में हिंसा वाली वीडियो फुटेज में हिंसा करते पाये गये। उस बैठक को कुछ दिशा निर्देश बग्गा ने भी दिये थे। लेकिन यह शख्स खुद हिंसा में शामिल नहीं था तो पुलिस ने हिरासत में कुछ देर रखने के बाद इसे छोड़ दिया।

यह तेजेंदर बग्गा वही शख्स है, जिसने मोदी के खिलाफ बोलने पर जाने-माने एडवोकेट प्रशांत भूषण के चैंबर में उन पर जानलेवा हमला किया था। तब उसने यह हमला भाजपा के बैनर की बजाय शहीद भगत सिंह क्रांति सेना के बैनर तले किया था। जब इसने इस तरह के कई कारनामे किये तो भाजपा ने इसे साधारण कार्यकर्ता के लेवल से प्रमोशन कर पार्टी की प्रदेश ईकाई का प्रवक्ता बना दिया। नरेंद्र मोदी ने इसे प्रधानमंत्री निवास में बुलाया। इसके साथ फोटो खिंचवाई। उस फोटो का इस्तेमाल बग्गा अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर भी करता रहता है। ट्विटर पर मोदी इसको भी फॉलो करते हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि भाजपा ने तमाम मौकों पर इस्तेमाल के लिए कैसे-कैसे लोगों को पाल रखा है।

# गांधी को गाली दो, गोडसे को देशभक्त बताओ...तुम्हारे पास काम ही क्या है

## बहुसंख्यक तुष्टिकरण के ढोंग पर चलते हुए संघ का मुख्य मिशन गांधी को नीचा दिखाना है

**हिंदीवाणी**

**नई दिल्ली:** पिछले पाँच साल में महात्मा गांधी को गाली देने का चलन आम हो गया है। आरएसएस और उसकी राजनीतिक शाखा भाजपा ने इसे एक मिशन की तरह आगे बढ़ाया है। अपने छुटभैये नेताओं से गाली दिलवाते हैं। फिर उस गाली को उसका निजी विचार बता दिया जाता है। बहुत दबाव महसूस हुआ तो उसको पार्टी से निकालने का बयान जारी कर दिया जाता है या माफ़ी माँग ली जाती है।

मैं अक्सर कहता रहा हूँ कि जिन राजनीतिक दलों या जिस क़ौम के पास गर्व करने लायक कुछ नहीं होता वो या तो अपने प्रतीक गढ़ते हैं या फिर मिथक का सहारा लेते हैं। कई बार अंधविश्वास तक का सहारा ले लेते हैं।

**गांधी, आंबेडकर, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, आज़ाद या भगत सिंह से आरएसएस और भाजपा सिर्फ इसलिए चिढ़ते हैं क्योंकि ये सारे गढ़े गए प्रतीक नहीं हैं। ये सभी भारतीय जनमानस में बसे हुए प्रतीक हैं।**

बहुसंख्यकवाद के तुष्टिकरण की नीति पर चलने वाले संगठनों के पास गर्व करने लायक कोई प्रतीक नहीं है। इनके प्रतीकों का अतीत अंग्रेज़ों की मुखबिरी करने और उनसे माफ़ी माँगने में बीता है। भारत जब आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था तो इनके गढ़े गए प्रतीक सावरकर, गोडसे वग़ैरह मुखबिर थे या माफ़ीनामा लिख रहे थे। भारतीय इतिहास के निर्णायक मोड़ पर ये लोग गांधी की हत्या करते पाये गए...उससे अगले मोड़ पर ये लोग नफ़रत फैलाते और समाज को बाँटते पाए गए। हेगडेवार की देश

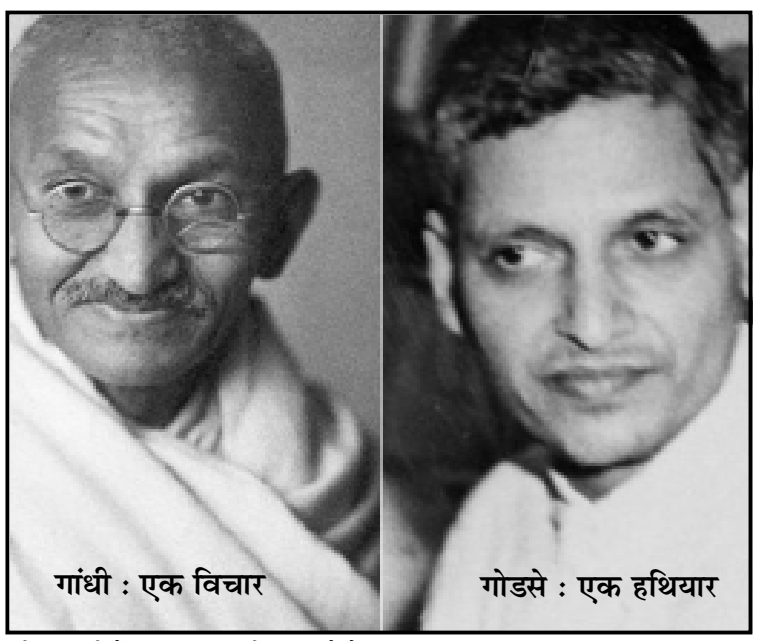


की आज़ादी में क्या भूमिका थी? उन लोगों के पास कहने के लिए कुछ नहीं हैं। ग्वालियर जेल में बंद अटल बिहारी वाजपेयी की लिखी इबारत कौन भूल सकता है।

राष्ट्रपिता के सम्मान में आतंकी मुलजिम प्रज्ञा ठाकुर की नीच हरकत के लिए भाजपा या उसके नेताओं के घड़ियाली आँसू एक बहाना हैं। वो सिर्फ 23 मई तक टाइमपास के लिए माफ़ी माँग रहे हैं। सत्ता में लौटते ही भारतीय गौरव के प्रतीकों को दोगुना तेज़ आवाज़ में गाली देने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। यह सब आप लोगों की आंखों के सामने होगा और आप लोग कुछ नहीं कर पायेंगे। उसका एक सीन तो आज ही सामने आ गया। मोदी ने दिन में माफी मांगी, शाम को भाजपा मुख्यालय में अमित शाह ने जो प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई, उसमें प्रज्ञा का मामला उठने पर अमित शाह ने कहा कि हमने सभी को नोटिस जारी कर दिया है। उनके जवाब के बाद उचित कार्रवाई होगी। इसके बाद अमित शाह ने भगवा आतंकवाद के लिए कांग्रेस को कोसना शुरू किया और प्रज्ञा ठाकुर को विक्टिम (पीड़ित) बताया।

इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में अमित शाह ने एक बार भी गांधी जी के बारे में दिए गए प्रज्ञा के बयान की निंदा नहीं की। मोदी ने भी अपने उन वाक्यों को नहीं दोहराया जो उन्होंने दिन में बोला था कि मैं प्रज्ञा ठाकुर को माफ नहीं कर पाऊंगा।...इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि दोगलेपन की सीमा कहां तक फैली हुई है। संघ और भाजपा के तमाम नेता और कार्यकर्ताओं के दिलों में गोडसे बसा हुआ है। वह ऊपरी माफीनामे से नहीं खत्म होने वाला।

भाजपा में हिम्मत है तो ऐसे सभी लोगों को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाये। प्रज्ञा के बयान की तुलना मणिशंकर अय्यर के बयान से करना दरअसल प्रज्ञा को भी प्रतीक की तरह स्थापित करने की नाकाम कोशिश है। महात्मा गांधी के प्रति संघ और भाजपा का प्रेम एक बड़ा फ्रॉड है।

### गोडसे आतंकवादी ही तो है

अगर गोडसे को आतंकवादी नहीं कहा जाएगा तो क्या रंगा-बिल्ला को आतंकवादी कहा जाएगा?

कमल हासन ने गलत क्या है...क्या महात्मा गांधी का हत्यारा गोडसे पहला हिंदू आतंकवादी नहीं था?

क्या आजाद भारत में यह पहली आतंकी घटना नहीं थी? गोडसे को किस विचारधारा ने खड़ा किया था?

कमल हासन ने ऐतिहासिक तथ्य ही तो बताएं हैं। इसमें एक खास राजनीतिक दल को क्यों ऐतराज है।

उसे तब शर्म नहीं आती है जब वह कश्मीर में पूर्व आतंकवादियों से चुनाव में गठजोड़ करती है।

**उसे तब भी शर्म नहीं आती जब वह कश्मीर के अलगाववादियों का समर्थन करने वाली पार्टी से मिलकर सरकार बनाती है। कल को उसे मुस्लिम लीग की मदद से मिलकर केंद्र में सरकार बनानी पड़े तो भी वह मुस्लिम लीग का समर्थन लेने से नहीं हिचकेगी। क्या अंग्रेजों के समय में कायदे-आजम मोहम्मद अली जिन्ना की पार्टी के साथ हिंदू महासभा ने संयुक्त सरकार नहीं बनाई थी। कह दो कि यह झूठ है, फिर क्यों नहीं इतिहास की किताबों से जिन्ना-हिंदू महासभा गठजोड़ के पन्नों को हटा देते?**

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06